स्थिति – अहमदाबाद जिले में भोगवा नदी के किनारे.

प्राप्त सामग्री – वृत्ताकार तथा चौकोर अग्निवेदिका, चावल व बाजरा जिसमें दोमुंह राक्षस का अंकन, फारस की मुहरें, घोड़े की मृण्मूर्ति, हाथी दाँत का एक स्केल, गोदी-बाड़ा, तीन युग्मित समाधि, अनाज पीसने की-चक्की, बेलन, खरगोश, और कुत्ते की आकृति आदि।, अनाज की दाने, रंगाई के कुण्ड, चूल्हों के अवशेष, पूरा का पूरा हाथी दाँत, कांसे की बनी एक सुई, नावों के 5 मॉडल, एक भांड पर अंकित चालाक लोमड़ी का चिन्ह, बतख का चित्रण, एक मृद्भांड पर अंकित बारहसिंगों की आकृति इत्यादि।

(5) कालीबंगा (काले रंग की चूड़ियाँ): दुर्ग वर्गाकार

क्षेत्र में :– राज्य – राजस्थान (भारत).

उत्खननकर्ता – अमलानन्द घोष, बी० के० थापर, ब्रजवासी लाल (1961).

वर्ष – 1953ई०, 1960ई०, 1961ई०.

स्थिति – हनुमानगढ़ गंगानगर जिले में घग्गर नदी के तट पर सरस्वती और दृषद्वती की घाटी में सकरान तट से 5½ km. उत्तर दृशक नदी के तट पर.

प्राप्त सामग्री – जुते हुए खेत, चना, सरसों, लकड़ी की पाइप, बेलनाकार मुहरें, अग्नि हवन कुण्ड, अलंकृत ईंट, ऊँट की अस्थियाँ, चूड़ियाँ, कब्रिस्तान, जौ, कच्चे ईंट का प्रयोग, एक मुद्रा पर व्याघ्र का अंकन, कपड़े में लिपटा एक उस्तरा, दो फसल एक साथ बोने के साक्ष्य इत्यादि।

(6) सुत्कागेंडोर :– राज्य – बलूचिस्तान (दृशकनदी पाकिस्तान).

उत्खननकर्ता – औरेल स्टालन, डेल्स.

वर्ष – 1927ई० ; 1962ई०.

प्राप्त सामग्री – मनुष्य की अस्थि, राख से भरा बर्तन, ताँबे की कुल्हाड़ी, मिट्टी से बनी चूड़ियाँ आदि।

Continue.....

हड़प्पा सभ्यता का निर्धारण काल

(a) एच० हेरास (नक्षत्रीय आधार पर): 6000 ई०पू०.
(b) सरगान (मेसोपोटामिया) का अभिलेख : 3250-2750 ई०पू०.
(c) जॉन मार्शल : 3250-2750 ई०पू०.
(d) अर्नेस्ट मैके : 2800-2500 ई०पू०.
(e) एम० एस० वत्स : 3500-2700 ई०पू०.
(f) व्हीलर : 2500-1500 ई०पू०.
(g) फेयर सर्विस : 2000-1500 ई०पू०.
(h) रेडियो कार्बन पद्धति : 2350-1750 ई०पू०.
(i) N.C.E.R.T. : 2500-1800 ई०पू०.
(j) विकसित अवस्था : 2200-2000 ई०पू०.
(k) रोमिला थापर : 2300-1750 ई०पू०.

हड़प्पा कालीन धार्मिक परम्पराएँ :

हड़प्पा में महिलाओं की कई टेराकोटा मूर्तियाँ मिली हैं। एक मूर्ति में एक महिला के भ्रूण से एक पौधे को उगते हुए दिखाया गया है। संभवतः यह धरती भूमि की देवी का संकेत देती है। जिससे पौधों की उत्पत्ति और विकास का संबंध जुड़ा है। हड़प्पा ने धरती को प्रजनन की देवी के रूप में देखा और उसी तरह उसकी पूजा की। जैसे मिस्र ने नील देवी आइसिस की पूजा की थी। हम नहीं जानते कि हड़प्पा के लोग मिस्र के लोगों की तरह मातृप्रधान हैं या नहीं। मिस्र में बेटी सिंहासन या सम्पत्ति की उत्तराधिकारी बनती थी, लेकिन हम हड़प्पा समाज के विरासत व शासन की प्रकृति के बारे में नहीं जानते।

कुछ वैदिक ग्रंथों में भूमि की देवी के लिए एक श्रद्धाभाव का संकेत मिलता है। हालाँकि उसे कोई प्रमुख स्थान नहीं दिया गया है। हिन्दू धर्म में बड़े पैमाने पर सर्वश्रेष्ठ देवी की पूजा के विकास में बहुत समय लगा। पुराणों और तन्त्र साहित्य में वर्णित दुर्गा, अम्बा, काली और चण्डी जैसी विभिन्न देवी माता के संकेत छठी शताब्दी से मिलते हैं। उस दौरान हर गाँव की अपनी अलग देवी थी।

सिन्धु घाटी में पुरुष देवता :

नर देवता मुहरों में अंकित हैं। इस देवता के तीन सींग वाले सिर हैं, जिसमें वह योगी की मुद्रा में एक पैर दूसरे पर चढ़ाकर बैठा है। इस देवता के पास एक हाथी, एक शेर, एक गैण्डा और सिंहासन के नीचे एक भैंस है। इसके पैर के नीचे दो

Continue......